CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाराणसीस्थ श्रीभाष्यकार जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्यपीठाचार्य

जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य - रामप्रपन्नाचार्य

योगीन्द्र प्रवर्त्तित विश्राम द्वारकास्थ श्री श्रीमठ संचालित

ज.गु.श्री रामानन्दाचार्य-पीठ

सचित्र धार्मिक मासिक

संरक्षक- शेठ श्री अमरशी कुरजी मजिठिया

सम्पादक- स्वामी रामेश्वरानन्दाचार्य

सहसम्पादक- पं. शरच्चन्द्र शास्त्री

मध्ये मार्गपरिश्रान्तो विश्रामं प्राप्य शृङ्गिणः ।
आश्रमे परमारामे कृष्णो वचनमब्रवीत् ॥
त्वया संस्थापितां मूर्तिं विश्रामद्वारकापते ।
अदृष्ट्वा द्वारकायात्रा नराणां निष्फला भवेत् ॥
यथा व्यासमनालोक्य काशीयात्राहिनिष्फला ।
तथैव द्वारकायात्रा कृतेऽत्राऽगमनाद् भवेत् ॥

कार्यालयः श्री कोसलेन्द्र मठ, सरखेज रोड, पाल्डी,
अहमदाबाद-३८०००७

वर्ष ४ विक्रमाब्द २०३९ अंक ११

श्रीरामानन्दाब्द ६८२ १ जनवरी १९८३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[पेज नं. १६ का शेष भाग]

के द्वारा अग्निर्हिमस्य भेषजम्, ऊष्णत्वात्, सूर्यवत्, भी सिद्ध है। और अग्निर्हि,मस्य, भेषजम्—शु य. २३।१० इस शब्द प्रमाण द्वारा भी सिद्ध है। अतएव ये तीनों ही ज्ञान स्वतन्त्र रूपेण प्रत्यक्ष, अनुमान, तथा शब्द से प्राप्त है। तब इन तीनों में किस प्रमाण को सबसे प्रबल माने ? शब्द प्रमाण के आग्रही कह उठेगे श्रुति प्रमाण को परन्तु यह कथन कथन मात्र है। क्योंकि न तो यह शब्द ज्ञान मौलिक ज्ञान है और न पूर्णतम अतः यह दोनों से प्रबल कभी हो नही सकना है। प्रत्यक्ष प्रमाण ही हमें अग्नि के हिम का औषध पूर्ण और यथार्थ ज्ञान प्राप्त कराता हैं। शब्द प्रमाण तो मात्र सङ्केत करता है पुनः वह सन्देह का भी विषय रहता उसमें विषयता का सङ्केत होने पर भी प्रकारता के यथार्थ अनुभव का अभाव रहता है। अतः यह अपूर्ण होने से प्रत्यक्ष के आगे निर्बल है। पुनः यह ज्ञान मौलिक भी नही है। इस मन्त्र के पूर्व मन्त्र में प्रश्न पूछा गया है—"किंस्विद्धिमस्य भेषजम् शु. य. २३।९। अतएव यह ज्ञान प्रश्न जनित एतावता अमौलिक शब्द हैं॥ पुनः यह उत्तर 'गोः कृष्णत्वम्' के समान अव्याप्त लक्षण हैं। इसका सल्लक्षण हिम का व्याघातक पद उष्ण होने से उष्णो हिमस्य भेषजम् ही होता। जो चिन्त्य हैं। यह शब्द ज्ञान प्रत्यक्ष एवं अनुमान से प्रबल नहीं प्रत्युतनिर्बल हैं। पुनः शब्द प्रमाण को दो प्रकार का माना गया हैं दृष्टार्थ, अदृष्टार्थ, स द्विविधो दृष्टादृष्टार्थत्वात्—न्या. सू १।१।८। यहां दृष्टार्थ का प्रामाण्य प्रत्यक्ष से सिद्ध ह। एवं जिसका प्रामाण्य अनुमान से सिद्ध हो वह अदृष्टार्थक है—"सदृष्टार्थोऽपि

[शेष भाग टाइटल नं. ३ पर]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ईश्वर के साधक प्रमाण

ले० श्री वैदेहीकान्त शरण

क्रमागत

अत एव स्वयं ब्रह्मसूत्रकार एवं शंकराचार्य भी अनुमान के द्वारा ईश्वर को कर्मफल प्रदाता के रूप में सिद्ध करते हैं।

स्वतः प्रस्तुत प्रसङ्ग का सूत्र "शास्त्रयोनित्वात्" भी इस सूत्र में प्रयुक्त अनुमान बोधक हेतु वचन पञ्चमी विभक्ति (पञ्चम्यन्तं लिङ्गप्रतिपादकवचनं हेतुः त० सं०) के द्वारा ईश्वर को अनुमान द्वारा ही सिद्ध करने का सङ्केत करते हैं। यदि अनुमान द्वारा ईश्वर को सिद्ध करना इष्ट नहीं होता तो यहाँ अनुमान बोधक हेत्वर्थक पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग क्यों होता पुनः इस सूत्र में प्रयुक्त 'शास्त्र' पद व्यापक है, इसकी व्याप्ति अनुमान शास्त्र में भी अबाध है। अतः इस सूत्र से प्रत्यक्ष वा अनुमान का निषेध नहीं प्रत्युत ग्रहण ही होता है।

'आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः बृह० २।५॥ "में परमात्मा को द्रष्टव्य (प्रत्यक्ष) एवं मन्तव्य (अनुमान) का विषय बतलाया गया है– "मुमुक्षुणा आत्मा द्रष्टव्यः, मुमुक्षोरात्मदर्शनमिष्टसाधनमिति। मन्तव्यः मननञ्चात्मन इतर भिन्नत्वेनानुमानम्।" "श्रोतव्यः श्रुतिवाक्येभ्यो मन्तव्योश्चोपपत्तिभिः। मत्वा च सततं ध्येयमेते दर्शनहेतवः। आगमेनानुमानेन ध्यानाभ्यासरसेन च। त्रिधा प्रकल्पयन् प्रज्ञां लभते योगमुत्तमम्। "आगमेनानुमानेन ध्यानात्प्रत्यक्षणेन च। त्रिधात्मनि प्रमाणानां संप्लव ! स्वार्थमिष्यते॥ खण्डनोद्धारे पृ० ३४०॥" श्री मद्भगवद्गीता भी अनुमान द्वारा परमात्मा का निरूपण करती है–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनादित्वान्निर्गुणत्वात् परमात्मायमव्ययः ।
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥गी. १३।३२॥

स्वयं सम्पूर्ण ब्रह्मसूत्र प्रायः हेतुओं द्वारा ही ब्रह्मज्ञान का निरूपण करते है–"ब्रह्मसूत्र पदैश्चैवं हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥गी. १३।४॥"

'अनुमान' शब्द में प्रयुक्त अनु पद का अर्थ पश्चात् और सादृश्य दोनों ही होता है–'अनु पश्चात्सादृश्योरपि ॥मे०॥''अतः अनुमान का अर्थ पश्चात् ज्ञान और सादृश्य ज्ञान दोनों है। उपनिषदों में भी इस सादृश्यज्ञान (अनुमान) के द्वारा ब्रह्म के जगत्कर्तृत्व का निरूपण किया गया है–"यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्यामोषधयः संभवन्ति । तथा सतः पुरुषात् केशलोमानि तथाऽक्षरात्संभवतीह विश्वम् ॥मु० १।१।७॥" अतः उपनिषद् भी अनुमान द्वारा ब्रह्म के जगत्कर्तृत्व का प्रतिपादन करते हैं ।

न्यायाचार्य श्री उदयनाचार्य जी ने अकाट्य नव अनुमानों से जगत्कर्ता ईश्वर की सिद्धि की है–

"कार्यायोजन धृत्यादेः पदात् प्रत्ययतः श्रुतेः ।
वाक्यात् संख्या विशेषाच्च साध्यो विश्वविदव्ययः ॥न्या. कु ५।१॥

१. कार्यात्–क्षित्यादिकं सकर्तृकं कार्यत्वात् ।
सकर्तृकत्वं च उपादानगोचरापरोक्षज्ञानचिकीर्षा कृतिमज्जन्यत्वम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२. आयोजनात्—'आयोजनं' कर्म, एवं च सर्गाद्यकालीन द्व्यणुकारम्भकपरमाणुद्वयसंयोगजनकंकर्मचेतनप्रयत्नपूर्वकं कर्मत्वात् अस्मादादि शरीरक्रियावत् ।

३. धृतेः—'धृतीति ब्रह्माण्डादि पतनप्रतिबन्धकीभूत प्रयत्नवदधिष्ठितं धृतिमत्त्वात् वियति विहङ्गमधृतकाष्ठवत् धृतिश्च गुरुत्ववतां पतनाभावः ।

४. आदेः-आदि पदात् नाशपरिग्रहः । 'ब्रह्माण्डादि प्रयत्नवद्विनाश्य, विनाशित्वात्, पाट्यमानपटवत् ।

५. पदात्—पद्यतेऽनेनेति व्युत्पत्त्या 'पदं' व्यवहारः । पदादि सम्प्रदाय व्यवहारः स्वतन्त्र पुरुषप्रयोज्यः व्यवहारत्वात्, आधुनिक लिप्यादि व्यवहारवत् ।

६. प्रत्ययकः—प्रामाण्यात् । वेदजन्यज्ञानं कारणगुणजन्यं प्रमात्वात्, प्रत्यक्षादिप्रभावत् ।

७. श्रुतेः—वेदात्, 'वेदः पौरुषेयो वेदत्वात् आयुर्वेदवत् ।

८. वाक्यात्—वेदः पौरुषेयो वाक्यत्वात्, भारतादिवत् । वेद वाक्यानि पौरुषेयाणि वाक्यत्वात्, अस्मादादि वाक्यवत् ।

९. संख्याविशेषात्—द्व्यणुकपरिमाणं संख्याजन्यं परिमाण अचयाजन्यत्वे सति जन्यपरिमाणत्वात् ।

तुल्य परिमाणक कपाल द्वयारब्ध घटपरिमाणात् प्रकृष्टतादृश कपाल त्रयारब्धं घटपरिमाणवत् ।"

इस प्रकार ईश्वर के साधक प्रत्यक्ष, अनुमान एवं शब्द—ये तीनों ही प्रमाण हैं । केवल शब्द प्रमाण ही नहीं । प्रत्यक्ष और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनुमान को परमेश्वर का साधक प्रमाण नहीं मानने पर ईश्वर के प्रमात्व में त्रुटि होगी और वह यथार्थ वस्तु न होकर कवियों की कल्पना—' आकाश कमल के समान अलीक कोरा शाब्दिक विषय रह जायेगा। अत एव ईश्वर सर्व प्रमाण गम्य है। वस्तुतः वह प्रत्यक्ष करने योग्य है। शास्त्र भी उसके प्रत्यक्ष दर्शन (द्रष्टव्यः) करने का उपदेश करते हैं। अत एव प्रथम पक्ष नितान्त भ्रान्त है।

तृतीय पक्ष का कथन कि यदि ईश्वर प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाणों से सिद्ध नहीं हो सकता तो वह शब्द प्रमाण से भी सिद्ध नहीं हो सकता सर्वथा सत्य है। स्वयं उपनिषद् उसे शब्द का अविषय बतलाते है "यतो वाचो निवर्तन्ते आप्राप्य मनसा सह तैन्तिरीय० ४-१— तब ब्रह्म के सम्बन्ध में शब्द प्रमाण कथमपि नहीं हो सकता है। पुनः स्वयं वेद कहते हैं कि इस सृष्टि को कौन जानता है कौन इसका वर्णन करे। यह सृष्टि किस उपादान कारण से उत्पन्न हुई ? किस निमिन्त कारण से ये विविध सृष्टियां हुई ? सभी देवता तो सृष्टि के बाद उत्पन्न हुये है। कहां से सृष्टि हुई, यह कौन जानता है ? ये भिन्न-भिन्न सृष्टियां कहाँ से हुई किसने सृष्टि की और किसने नही की—यह सब वे ही जानते जो इनके अध्यक्ष परमधाम में रहते हैं। यह भी हो सकता है कि उन्हें भी इस सृष्टि रचना के बारे में कुछ भी मालूम नहीं हो-

"कोअद्धावेद कं इह प्रवोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः।
आर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथा को वेद यत आबभूव॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इयं विसृष्टिर्यत आवभूव यदि वा दधे यदि वा न ।
यो अस्याध्यक्षः परमेव्योमन्त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद ॥
ऋ० १०-१२९-६-७ ॥

अत एव जगत्सृष्टि की सिद्धि शब्द प्रमाण से कथमपि नही हो सकती । वेदोपदिष्ट परमेश्वर को इस सृष्टि का ज्ञान है या नहीं इसका अनिश्चय है ।

पुनः शब्द प्रमाण अपने प्रामाण्य के लिये परतन्त्र है (प्रमाया परतन्त्रत्वात्—न्या० कु० २।१७ शब्द प्रमाण का प्रमाण्य तभी होता है जब कि उसका वक्ता प्रमाण हो । आप्तोपदेशः शब्दः न्या०सू० १—१—७—आप्तः खलु साक्षात्कृत धर्मा । यथा दृष्टस्यार्थस्य चिख्यापयिषया प्रयुक्तः उपदेष्टा । साक्षात्करणमर्थस्याप्तिः । अवर्वते इत्याप्ततया । वा. भा. ॥ " जब परमेश्वर को सृष्टि का ज्ञान है या नहीं का ही निश्चय नहीं है तब इस सम्बन्ध में शब्द प्रमाण है कैसे हो सकता ? पुनः हमारे लिये शब्द प्रमाण तो साक्षात् इस तत्त्व का साक्षात् करनेवाले व्यक्ति का वाक्य ही हो सकता है । सुने हुये का वाक्य नहीं । ऐसा साक्षात् श्रुति नहीं अत एव यथार्थतः शब्द प्रमाण का इस प्रकरण में अभाव है । वेदादि के वाक्य उन साक्षात्कार किये प्रत्यक्ष दर्शी ऋषिपों के वाक्य हैं या उन के नाम पर अन्य विद्वानों के ? इसका निश्चय नहीं है । अत एव शब्द प्रमाण का निश्चय नहीं है । अतः जब हम स्वतः प्रत्यक्ष दर्शी आप्त व्यक्ति वाक्य नहीं प्राप्त कर उनके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाम पर सुनी सुनाई बात सुनते हैं तब वह पुरुष के मीमांसा शास्त्र प्रतिपादित भ्रम प्रमाद, विप्रलिप्सा आदि पुरुष दोष युक्त होनेसे कैसे प्रमाण हो सकता है ? शब्द प्रमाण तो सभी धर्मी, विधर्मी, अधर्मी आदि के यहाँ है ।

हम ईश्वर के सम्बन्ध में वेद को प्रमाण मानने वाले हैं । किन्तु वेदों की प्रमाणिकता भी तो प्रत्यक्ष ("ऋषयः मन्त्र द्रष्टार :) एवं अनुमान (मन्त्रायुर्वेद प्रामाण्य वच्च तत्प्रामाण्यमाप्तप्रामाण्यात् न्या. सू. १–६९) के द्वारा ही सिद्ध करते हैं । अत एव शब्द प्रामाण्य मूल में भी प्रत्यक्ष एवं अनुमान प्रमाण ही हैं । अतः ईश्वर साधक प्रत्यक्ष एवं अनुमान को मानने पर ही शब्द प्रमाण भी ईश्वर साधक प्रमाण माना जा सकता है । अन्यथा नहीं ।

लगता है कि ब्रह्मसूत्र के भाष्यकारों ने "शास्त्रयोनित्वात्" सूत्र की व्याख्या के प्रकरण में ब्रह्म के सम्बन्ध में नास्तिकों के समान प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाणों का खण्डन करते हुए रक्षा में हत्या अथवा विनायकं प्रकुर्वाणो रचयामास वानरम् की लोकोक्ति को चरित्रार्थ करते हुए ब्रह्म की सत्ता पर ही कुठाराघात किया है । अनुमान प्रमाणों का खण्डन करने से अनीश्वरवाद को बहुत बडी मदद मिली है ।

जैसा कि ऊपर विस्तार से विचार किया जा चुका है ईश्वर के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष–अनुमान–शब्दादि सभी प्रमाण है । वह सर्व प्रमाण सिद्ध परम प्रामाणिक पुरुष है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शंकराचार्य जी ने शारीरक भाष्य में सृष्टि उत्पादन आदि के विषय में अनुमान कोभी प्रमाण माना है—"सत्सुतु वेदान्त वाक्ये जगतो जन्मादि कारणवादिषु तदर्थ प्रतिपादमर्यादानुमानमपि वेदान्तवाक्याविरोधिप्रमाणं भवन्ननिवार्यते ।

कुछ लोग ब्रह्म के जगत्कर्तृकत्वादि के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष और अनुमान का निषेध करते हुये मीमांसकों का यह श्लोक प्रस्तुत करते हैं

"प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते ।
एनं विदन्ति वेदेन तस्मा द्वेदस्य वेदता ॥ "

परन्तु यह भ्रान्त है । मीमांसकों का सिद्धान्त है कि वेद में किसी सिद्ध पदार्थ का प्रतिपादन नही हैं । उसमें सर्वत्र किसी न किसी क्रिया अथवा क्रिया सम्बन्ध अर्थ का ही प्रतिपादन है । जैसा कि मीमांसा के "आम्नायस्य क्रियार्थत्वादानर्थक्यमतदर्थानाम् मी. सू. १—२—१ ' तदभूतार्थानां क्रियार्थेन समाम्नायः—मी. सू. १-२—२५ आदि सूत्रों से सिद्ध है । उपरोक्त श्लोक भी 'उपाय' (क्रिया) विषयक ही है सिद्ध ईश्वर विषयक नहीं । अत एव यह श्लोक केवल उपाय सम्बन्ध में ही लौकिक पुरुष का 'अग्नि होत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः में उपाय के सम्बन्ध में न तो लिङ्ग दर्शनाभाव में अनुमान हो सकता हैं । और न प्रत्यक्ष के कारण केवल वेद को ही उपाय बोधक बतलाता है अत एव मीमांसकों के उक्त उपाय सम्बन्धी श्लोक से ईश्वर सम्बन्धी प्रत्यक्ष अथवा अनुमान का निषेध नहीं होता ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न्याय शास्त्र ने तो मीमांसकों के उत्तम कथन कि वेद में किसी सिद्ध पदार्थ ईश्वर का प्रतिपादन नही है का अनुमान एवं प्रत्यक्ष द्वारा खण्डन किया है–

" कृत्स्न एव च वेदोऽयं परमेश्वरगोचरः ।
स्वार्थद्वारैव तात्पर्यं स्वार्गादिवद् विधौ ॥ न्या. कु.५-१५

अतः उक्त आपत्ति भ्रान्त है ।

अब एक ही प्रमाण विषयक तात्त्विक प्रश्न रह जाता है कि जहाँ शब्द प्रमाण से ईश्वर को सिद्धि हो चुकी है वहाँ इस शब्द सिद्धि के रहते हुए अनुमान की प्रवृत्ति कैसे होगी इसका उत्तर यह है कि साध्य का ज्ञान हो अपना विरोधी नही है कि एकबार साध्य का ज्ञान हो जाने पर दूबारा उस साध्य का ज्ञान न हो सके । धारावाहिक बुद्धिस्थल में एक ज्ञान अनेक बार होती है । यह साध्य उन अनुमिति का भी विरोधी नही है । शब्दादि अन्य प्रमाणों से प्राप्त अर्थ को भी अनुमान प्रमाण से ज्ञान होता है । न्याय सूत्र भाष्यकार वात्स्यायन ने लिखा है कि "पुनः प्रमाणानि प्रमेयमभिसम्प्लवन्ते उत व्यवतिष्ठन्ते । इत्युभय दर्शनम् । अस्त्यात्मेत्याप्तोपदेशात् प्रतीयते, तत्रानुमानम् इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञानान्यात्मनो लिङ्गमिति । प्रत्यक्षा युञ्जवानस्य योग समाधिजमान्ममनसो : संयोगविशेषादात्माप्रत्यक्ष इति अग्निराप्तोपदेशात् प्रतीयते अत्राग्निरिति । प्रत्यासीदता धूमदर्शनेनानुमीयते, प्रत्यासन्नेन च प्रत्यक्षत उपलभ्यते । हरिदासविवृति में लिखा है–
" शाब्दसिद्धावप्यनुमित्सयानुमितेन संशयासत्त्वं दोषाय ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् शब्द प्रमाण से ईश्वर की सिद्धि रहने पर भी अनुमान के द्वारा उसको सिद्ध करने की इच्छा रहने से उसकी अनुमिति हो सकती है। इसलिए ईश्वर के विषय में संशय का नहीं होना अनुमान का बाधक नहीं है। इसी प्रकार शाब्दज्ञान प्राप्त करने में शाब्दज्ञान वा अनुमिति बाधक नहीं है। अत एव सभी प्रमाण अभिसम्पल द्वारा एक साथ परमेश्वर के साधक हैं और हो सकते हैं। इसमें कोई भी प्रमाण शास्त्रीय बाध नहीं है।

अब एक आपत्ति यह है कि "ईश्वर जिस प्रकार शास्त्र सिद्ध है उस प्रकार अन्य प्रमाण सिद्ध नहीं।"

परन्तु यह भी आपत्ति भ्रान्त है। वेदान्त शास्त्र (ब्रह्मसूत्र) सिद्ध ईश्वर अनुमान सिद्ध ही है जैसा कि ऊपर सिद्ध किया जा चुका है कि ब्रह्म सूत्र हेतु (हेतुरनुमानम्) के द्वारा ही ब्रह्म का विचार और निर्णय करते हैं। पुनः शास्त्रों का तात्पर्य भी ब्रह्म के प्रत्यक्ष दर्शन में ही है, कोरे शाब्दिक ज्ञान में नहीं (आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः)। अतः ईश्वर या किसी भी वस्तु विषय के सम्बन्ध में जैसा प्रमाण है, वैसा कोई भी प्रमाण नहीं है। अत एव प्रत्यक्ष प्रमाण सिद्ध ईश्वर ही वेदान्त का तात्पर्य और अन्तिम लक्ष्य हैं।

एक प्रश्न और किया गया है कि किसी के पिता को प्रमाणित करनेवाला माता का शब्द (कथन) ही प्रमाण होता है। तब ईश्वर की सिद्धि प्रत्यक्ष तथा अनुमान से न होकर शब्द से ही इसमें क्या आपत्ति है?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह प्रश्न भ्रान्त है। किसी के पिता को प्रमाणित करनेवाला न तो माता का शब्द प्रमाण होता है और न सब माता ही, प्रत्युत केवल आप्तमाता का और पिता आदि का शब्द भी। यदि माता व्यभिचारिणी और कुलटा हो तो उसका शब्द कथमपि प्रमाण नहीं हो सकता। पुनः पिता का वचन भी प्रमाण होता है, क्योंकि वह उत्पादक और प्रत्यक्ष साक्षी है। पुनः यदि वैदिक विधि से गर्भाधान किया गया हो तो पुरोहित आदि का वचन भी प्रमाण है। पुत्रेष्टि यज्ञ के सभी लोगों का वचन प्रमाण है। पुनः इस संबन्ध में केवल शब्द ही प्रमाण नहीं है। प्रत्युत पुत्र की जन्मकुण्डली, हस्तरेखा ललाट रेखा, आकृति, रक्तपरीक्षा आदि भी प्रमाण हैं। अत एव रक्त परीक्षादि अनुमान और पिता से मिलती आकृति आदि प्रत्यक्ष प्रमाण भी है। अतः प्रश्न कर्ता का माता के ही शब्द प्रमाण के सबन्ध में उपरोक्त प्रश्न भ्रान्त है। अत एव ईश्वर के संबन्ध में न केवल शब्द प्रत्युत अनुमान और प्रत्यक्ष प्रमाण अबाध हैं।

अत एव द्वितीय पक्ष का कथन ही ठीक है कि ईश्वर के विषय मे प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द ये सभी प्रमाण हैं। परमार्थ रूप में भी ब्रह्म प्रत्यक्ष का ही विषय है—"तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुरा ततम्॥ ऋ. १।२२।२०॥"

सर्व प्रमाण सिद्ध परम प्रमाण परमात्मा की जय।

कुछ लोग प्रमाणों की प्रबलता निर्बलता का भ्रान्त विचार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रस्तुत करते हुए प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द प्रमाणों का निरूपण कर इनमें शब्द प्रमाण को प्रबलतम एवं अनुमान प्रमाण को निर्बलतम मानते है तथा शब्द प्रमाण के द्वारा प्रत्यक्ष एवं अनुमान का बाध मानते हैं। कुछ लोग अनुमान और शब्द को अपृथक् मान कर शब्द प्रमाण को अनुमानान्तर्गत ही मानकर शब्द को पृथक् प्रमाण मानते ही नहीं हैं। कुछ लोग अनुमान द्वारा शब्द का बाध मानते हैं। कुछ लोग प्रत्यक्ष द्वारा अनुमान और शब्द का बाध मानते हैं कुछ लोग प्रत्यक्ष, अनुमान एवं शब्द में किसी को अधिक बल एवं किसी को न्यून बल नहीं मानते एवं किसी का बाधक किसी को नहीं मानते। इसी प्रकार इन तीनों में किसी दो को सामान्य एवं एक को विशेष नहीं मानते प्रत्युत सभी को विशेष मानते हैं। जिस प्रकार केवड़ा, गुलाब और वेला के फूलो में अपनी अपनी पृथक् विशेषता है जो अन्य दो में नहीं है। जैसे विमान, जहाज, और कार में अपनी अपनी विशेषता है। इसी प्रकार प्रत्यक्ष, अनुमान एवं शब्द की भी अपनी अपनी विशेषताएं है। अतएव प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द अपनी अपनी विशेषता से विशेषाविशेष रूपो से भिन्न भिन्न प्रकार से ईश्वर के प्रमाण बनते हैं। शब्द, अनुमान और प्रत्यक्ष ये तीनो का संयोग अनुमान है ऐसा भी कुछ लोगो का विचार है। शब्द, अनुमान और प्रत्यक्ष तीनो मिलकर ज्ञान की प्रक्रिया को पूर्ण करते है— शब्द नाम संकीर्तन रूप उद्देश्य का ज्ञापक है, अनुमान परीक्षा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का ज्ञापक है एवं प्रत्यक्ष फल का ज्ञापक है। सब मिलाकर ज्ञान तात्पर्य प्रत्यक्ष अनुभूति में हीहै।

अब ऊपरोक्त विभिन्न मतो में शब्द और अनुमान को एक ही प्रमाण मानने वाले वैशेषिक का कथन है कि शब्द और अनुमान समान विधि के कारण एक ही है। जिस प्रकार अनुमान में १ व्याप्तिग्रह, २ लिङ्ग दर्शन, ३ व्याप्तिस्मृति और ४ अनुमिति होती है ठीक उसी प्रकार शब्द में भी १. शक्तिग्रह २. वाक्य श्रवण, ३. पदार्थः स्मृति और ४ वाक्यार्थ बोध होता है। अतः समान विधि होने के कारण शब्द अनुमान के अन्तर्गत है। शब्द अनुमान है, व्याप्ति बल से अर्थ बोधक होने के कारण, धूम के समान। इस अनुमान से इस तथ्य की सिद्धि होती है।

शब्द को अनुमान के अन्तर्गत होने में दूसरी युक्ति है— शब्द प्रमाण मानने वाले पदार्थ के संसर्ग बोध को ही वाक्यार्थ मानते है।, उस संसर्ग का बोध अनुमान के द्वारा हो सकता है। (१) पदार्थाः परस्परं संसर्गवन्तः आकांक्षा योग्यतासत्तिमत्पदस्मारितत्वात् "एवं (२) एतानि पदानि स्वस्मारितपदार्थ संसर्ग प्रमापूर्वकाणि आकांक्षादिमत्पदत्वात। इन अनुमानो से संसर्ग की अनुमिति हो सकती है। इसलिए शब्द को अलग प्रमाण मानने की आवश्यका नही हैं।

इस प्रथम पदार्थ पक्षक अनुमान—"एते पदार्थाः परस्परं संसर्गवन्तः आकांक्षा योग्यतासत्तिमत्पदस्मारितत्वात्" के सम्बन्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में न्याय कुसुमाञ्जलि में शब्द को पृथक् प्रमाण मानने वाले नैयायिक पक्ष से श्रीउदयनाचार्यजी ने—अनैकान्त परिच्छेदे सम्भवे च न निर्णय न्य. कु. ३।१३ इस कारिका के द्वारा आपत्ति कीहै कि यहाँ इस अनुमान के द्वारा संसर्ग का परिच्छेदे निश्चय करने पर अनैकान्तिक दोष होगा और केवल संसर्ग की संभावनासिद्ध करने से निर्णय नहीं होगा। यदि केवल संसर्ग की संभावना मात्र अर्थात् 'उनका संसर्ग हो सकता है, यह सिद्ध कर रहे है तो संसर्ग का निश्चय नहीं हुआ, 'संसर्ग हो सकता है केवल इतना ही संभावना सिद्ध हुई। संसर्ग है हीं यह बात निश्चित नही हो सकी अतः संसर्ग का निर्णय नहीं हुआ। यदि संसर्ग का निश्चय इससे सूचित होता है तो 'पयसा सिञ्चति इत्यादि में इसका व्याभिचार होगा। क्योंकि पयस् शब्द के दो अर्थ होते हैं—एक जल और दूसरा दूध। कहीं जल औ कही दूध से सिञ्चन दोनों से ही हो सकता है। अतः पयसा सिञ्चति इन पदों में आकांक्षा, योग्यता और आसत्ति सब है। अत एव इन पदार्थों में परस्पर 'सम्बन्ध यहाँ अवश्य है—यह सिद्ध होता है। परन्तु 'पयसा शब्द जल के अभिप्राय से बोला गया है, वहाँ जल का तो सिञ्चन के साथ संसर्ग वक्ता की बुद्धि में है। दुध का नहीं। परन्तु आप के हेतु 'योग्यता आकोक्षा आसक्तिमत्पद-स्मरितत्वात् के अनुसार दुध के साथ भी उसका संसर्ग अवश्य होना चाहिए। जो कि है नहीं। इसलिये परिच्छेद अर्थात् संबन्ध के अवश्य भाव पक्ष में यह हेतु अनैशान्तिक है और सम्बन्ध के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्भावना पक्ष में संबन्ध का निर्णय नहीं होता है। इसलिये संसर्ग की सिद्धि अनुमान से नहीं हो सकती है।

परन्तु न्याय कुसुमञ्जलि के इस कारिका द्वारा आरोपित यह "अनैकान्तिकत्व का दोष निराधार और भ्रान्त है। उपस्थापित पयसा सिञ्जति का दृष्टान्त भ्रान्त है। जहाँ एक ही शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं, वहां उसे वक्ता ने किस अर्थ में प्रयोग किया है? यही वक्ता का अभिप्राय 'तात्पर्य कहलाता है। तात्पर्य को प्राचीन नैयायिकों ने उक्त "आकांक्षा के भीतर ही अन्तर्मुक्त किया है। क्योंकि आकांक्षा में न केवल उद्देश्य पद के साथ विधेय पद की आकाक्षां एवं विधेय पद के साथ उद्देश्य पद की आकांक्षा रहती है। प्रत्युत उद्देश्य अथवा विधेय पदों के अभिप्रेत अर्थ की भी वक्ता का अभिप्राय अभिप्रेत अर्थ वा तात्पर्य के भी शाब्द बोध में प्रबल आकांक्षा रहती हैं अत एव तात्पर्य (वक्ता का अभिप्राय) ऊपरोक्त "अकांक्ष के अन्तर्गत हैं। इसीलिये आकांक्षा के साथ ही इसे कहा गया हैं–

"यत्पदेन बिना यस्याननुभावकता भवेत्।
आकांक्षा वक्तुरिच्छा तु तात्पर्यं परिकीर्तितम्॥ भाषापरिच्छेदः॥

अतएव नैशेषिक द्वारा प्रस्तुत अनुमान के हेतु–"आकांक्षा-योग्यासत्तिमत्पदस्मारितत्वात् के' आकांक्षा पद के अन्तर्गत 'तात्पर्य का होने से यह हेतु पयसा सिञ्चति में अनैशान्तिक हेतु कथमपि नहीं है। प्रत्युत ऐकान्तिक और सद्धेतु है। इसलिए संसर्ग के परिच्छेद निश्चय के प्रकरण में यह साध्य साधक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं और इससे संसर्ग की सिद्धि अनुमान द्वारा सिद्ध होती है। पुनः तात्पर्य ज्ञान में भी प्रकरण के हेतु से अनुमान के द्वारा ही विवक्षा या तात्पर्य का ज्ञान होता है। अत एव शाब्द बोध अनुमान के द्वारा ही होता है अतः शब्द अनुमान के अन्तर्गत है।

अब पद पक्षक दूसरे अनुमान—"एतानि पदानिस्वस्मारितपदार्थ संसर्गप्रमापूर्वकाणि आकांक्षादिमत्पदत्वात्" में न्याय कुशुमाञ्जलि के—"आकांक्षा सत्तया हेतुर्योग्यासत्तिरबन्धना—न्या. कु. २।१३" के द्वारा यह आपत्ती की गयी है कि आकांक्षा स्वरूप सत्वरूप में शाब्द बोध का हेतु है। परन्तु अनुमान में आकांक्षा का ज्ञान आवश्यक है सत्ता नहीं। शब्द बोध में स्वरूपसती आकांक्षा उपयोगिनी है और अनुमान में 'ज्ञान सतो' आकांक्षा। ज्ञानसती का भाव यह है कि आकांक्ष का उस समय विद्यमान नहीं रहने पर भी केवल उसके ज्ञान मात्र से काम चल सकता है, परन्तु शाब्द बोध में अविद्यमान आकांक्षा से काम नहीं चलेगा। वहाँ आकांक्षा 'सत्तया' अर्थात् विद्यमान रूप से होती है। अतः अनुमान के द्वारा संसर्ग की सिद्धि नहीं हो सकेगी।

परन्तु यह आपत्ति भ्रान्त है। यह कहना सर्वदा भ्रान्त है कि "शाब्द बोध में आकांक्षा की सत्ता अपेक्षित है उसका ज्ञान हो यान हो और अनुमान में इस आकांक्षा का ज्ञान हेतु है, उसकी सत्ता उस समय हो या न हो। "शाब्द बोध में आकांक्षा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की न केवल सत्ता अपेक्षित है प्रत्युत उसका ज्ञान भी। नही तो "पयसा सिञ्चति में उद्देश्य पद 'पयसा के साथ आकांक्षित विधेय पद सिञ्चति की सत्ता विद्यमान रहने पर भी बिना पयसा उद्देश्य पद के अर्थ ज्ञान अथवा 'सिञ्चति विषय पद के अर्थ ज्ञान के शाब्द बोध बन हो नही सकता है। अतएव शाब्द बोध में स्वरूप सती के साथ ही ज्ञान सती भी आकाक्षा का होना आवश्यक है आकांक्षा अज्ञात विषयक हो ही नही सकती है, सर्वदा ज्ञात विषयक ही होती है। अतः शाब्द बोध की आकांक्षा भी ज्ञात सती है। पुनः अनुमान की भी आकाक्षा स्वरूप सती भी है। क्योंकि बिना स्वरूप ज्ञान के ज्ञान हो ही नहीं सकता है। अतएव इस प्रकरण में ज्ञान सती और स्वरूप सती की कल्पना व्यर्थ हैं। क्योंकि दोनों की व्याप्ति अनुमान और शब्द दोनों ही में है। अतएव यह पद पक्षक द्वितीय अनुमान भी निर्दोष है और शब्द प्रमाण अनुमान के अन्तर्गत ही सिद्ध हैं। फिर शब्द का अनुमान से अधिक बली होने एवं उससे अनुमान बाधित होने का प्रश्न ही कहाँ उठता है।

प्रत्यक्ष, अनुमान एवं शब्द प्रमाणों का अभि संप्लव (अनेक प्रमाण एक साथ द्वारा भी अर्थ की सिद्धि होती है और कही कही व्यवस्था (एक प्रमाण एक ही अर्थ की सिद्धि) के द्वारा भी जैसे प्रत्यक्ष ज्ञान से भी अग्नि हिम का औषध सिद्ध हैं। अनुमान

(शेष भाग टाइटल नं. २ पर)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर्वेश्वराभ्यां श्रीसीतारामाभ्यां नमः ।

आनन्दभाष्यकारजगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्याय नमः ।

जगद्गुरुश्रीटीलाचार्याय नमः । जगद्गुरुश्रीमङ्गलाचार्याय नमः ।

पण्डितसम्राट्श्रीवैष्णवचार्यसम्पादिते लघुपासनाङ्गचतुष्टयसंग्रहे

जगज्जननीश्रीसीतालघूपासनाङ्गचतुष्टयम्

दिव्यदेहगुणास्त्राय साञ्जनेयाय शेषिणे ।
सानुजाय ससीताय रामाय ब्रह्मणे नमः ॥२॥

प्रकाशकः—पण्डितसम्राट्स्वामीश्रीवैष्णवाचार्यवेदान्तपीठाचार्य
त्रणदेरी श्रीराममन्दिर शारंगपुरदर्वाजाबाहर
अहमदाबाद—२
श्रीरामानन्दसप्तमशताब्दी
मूल्य,७५ पैसे सन् १९८२ ईसवी प्रति—५००
श्रीरामानन्द प्रिंन्टिंगप्रेस—अहमदाबाद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पण्डितसम्राट्श्रीवैष्णवाचार्यप्रणीता

श्रीविदेहजापञ्चश्लोकी

नमस्ते नमस्ते जगत्कारिकायै
नमस्ते नमस्ते जगद्धारिकायै ।
नमस्ते नमस्ते जगद्हारिकायै
नमस्ते नमस्ते जगत्तारिकायै ॥१॥

नमस्ते नमस्ते महाशान्तिदायै
नमस्ते नमस्ते महाकान्तिदायै ।
नमस्ते नमस्ते महादुःखहन्त्र्यै
नमस्ते नमस्ते महासौख्यकन्त्र्यै ॥२॥

नमस्ते नमस्ते समृद्धिप्रदायै
नमस्ते नमस्ते सुबुद्धिप्रदायै ।
नमस्ते नमस्ते सुभक्तिप्रदायै
नमस्ते नमस्ते सुमुक्तिप्रदायै ॥३॥

नमस्ते नमस्ते त्रिलोकी–जनन्यै
नमस्ते नमस्ते कृपासिन्धवे च ।
नमस्ते नमस्ते पथःशिक्षिकायै
नमस्ते नमस्ते जगद्रक्षिकायै ॥४॥

नमस्ते नमस्ते सुराद्यर्चितायै
नमस्ते नमस्ते सुरादिस्तुतायै ।
नमस्ते नमस्ते विदेहात्मजायै
नमस्ते नमस्ते च रामप्रियायै ॥५॥

वैष्णवभाष्यकारश्रीवैष्णवाचार्यनिर्मिता ।
पञ्चश्लोकीत्वियं भूयाद् विश्वभूतविभूतये ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पण्डितसम्राट्श्रीवैष्णवाचार्यनिर्मितः

प्रातःकालीनः श्रीसीतास्तवः ।

प्रातर्नमामि रघुनायकवल्लभाया
पद्माङ्कुशादिलसितं हि पदारविन्दम् ।
दिव्यं महामुनिमनोभ्रमराभिसेव्यं
पापापहं सुखदमुक्तिकरं प्रणामात् ॥१॥

प्रातर्भजामि मिथिलेशसुताकराब्जं
रक्तं सुरम्यविमलं शुचिकोमलं च ।
आपद्गताभयकरं भयदं भयाना—
मालम्बनं च वरदं पदमाश्रितानाम् ॥२॥

प्रातः स्मरामि वसुधातनुजामुखाब्जं
हास्यश्रियाविलसितं सुविशालनेत्रम् ।
मञ्जुस्वनस्य जनकं जनमोदहेतुं
बिम्बाधरं रुचिरकुण्डलरम्यगण्डम् ॥३॥

प्रातः श्रयामि वसुधातनयां च दिव्यां
विद्युल्लताद्युतिमतीं सुषमानिधानम् ।
दिव्यैर्विभूषणपटैः सुविभूषिताङ्गीं
ध्येयामनुग्रहमयीं मुनिभिः सुमुक्तैः ॥४॥

प्रातर्वदामि मिथिलेश्वरकन्यकायाः
सीतेति नाम निखिलाघहरं जनानाम् ।
प्रेम्णा सकृच्च कथितं यमयातनाघ्न-
मुक्तिप्रदं सकलमङ्गलकरं पवित्रम् ॥५॥

वैष्णवभाष्यकारश्रीवैष्णवाचार्यनिर्मितम् ।
सीतास्तवमधीयाना यान्तु सीताप्रसन्नताम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीमैथिलीपञ्चकम् ।

या श्रीरामपरेशदिव्यवनिता या दिव्यधामेश्वरी
या च श्रीमिथिलाधिपस्य तनया योमारमासंस्तुता ।
या चाभीष्टफलप्रदा हरिहरब्रह्मादिभिर्वन्दिता
या वाचां मनसस्तथा न विषयः सा मैथिली पातु माम् ॥१॥

याऽऽर्त्तत्राणपरा त्रिलोकजननी श्रीरामचन्द्रप्रिया
या लोकैकभवाब्धिभीतिहरणी मृत्योर्भयाद् रक्षिणी ।
या वात्सल्यगुणाम्बुधिश्च जगतः सृष्टचादिहेतुः शुभा
या सौन्दर्यनिधिः सुरम्यवदना सा मैथली पातु माम् ॥२॥

या चामोघसुकीर्त्तना भगवतो दुर्भाग्यभोगैकहृद्
या चामोघसुपूजना भगवती सत्सिद्धिसम्पत्तिदा ।
या चामोघसुवन्दना भगवती सद्भुक्तिमुक्तिप्रदा
या चानुग्रहरूपिणी भगवती सा मैथिली पातु माम् ॥३॥

या चोदारशिरोमणिर्गुणनिधिर्या सर्ववित् सर्वकृद्
यो योगादिसुदुर्लभा सुलभतां संयाति सद्भक्तितः ।
या सच्छास्त्रनिरूपिताऽथ जगतो हेतुस्त्रिधा सम्मता
या चानन्दमयी सुदिव्यतनुभृत् सा मैथली पातु माम् ॥४॥

या स्वापादितसम्प्रदायजलधेः संवर्धिनी कौमुदी
या विभ्वी विभुवैभवा च वरदा सूर्यादिसम्भासिनी ।
या मुक्तेः पथदर्शिका सुखकरी श्रीराघवप्रीतिदा
या नित्या सकलेश्वरी भगवती सा मैथिली पातुमाम् ॥५॥

वैष्णवभाष्यकारश्रीवैष्णवाचार्यनिर्मितम् ।
पञ्चकं भवतादेतत् सर्वकल्याणकारकम् ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पण्डितसम्राट्स्वामि श्रीवैष्णवाचार्यनिर्मिता

श्रीसीतापूजापद्धतिः ।--

ईशित्री जगतोऽस्य विश्वजननी लावण्यवारांनिधि-
र्वात्सल्यादिगुणावधिः श्रितजनाभीष्टार्थदा सर्ववित् ।
ध्येया सज्जगदीशितू रघूपतेर्विम्वी प्रिया जानकी
यत्कारुण्यदिदक्षुणा भगवता सर्वं जगत् सृज्यते ॥१॥ ध्यानम्
आगच्छ भूमिजे ! देवि ! श्रीमद्रामस्य वल्लभे ! ।
तवार्चनं करिष्यामि जगन्मातः ! कृपां कुरु ॥१॥ आवाहनम् ।
त्रिदेवीभिः स्तुते सीते ! त्रिभिर्देवैश्च वन्दिते ! ।
दिव्यास्तरणसंयुक्तं गृह्यतां दिव्यमासनम् ॥२॥ आसनम् ।
देवैः सिद्धैर्मुनीन्द्रैस्त्वं पूजिता भक्तवत्सले ! ।
पाद्यं मयाऽर्पितं सीते ! गृहाण सकलेश्वरि ! ॥३॥ पाद्यम् ।
दिव्यौषधिरसोपेतं दिव्यगन्धेन संयुतम् ।
मया दत्तं गृहाणार्घ्यं मातः ! सीते ! दयाम्बुधे ! ॥४॥ अर्घ्यम् ।
दिव्यपात्रे स्थितं चाथ सुगन्धवासितं जलम् ।
गृहाणाचमनीयं च श्रीसीते करुणाम्बुधे ! ॥५॥ आचमनम्
शर्कराक्षीरदध्याज्यैः मधुना च समन्वितम् ।
स्नातुं पञ्चामृतं दत्तं गृहाण जनकात्मजे ! ॥३॥ पञ्चामृतम्
तोयैस्तीर्थाहृतैर्दिव्यैर्दिव्यौषधिरसान्वितैः ।
सुस्नापय्यहं सीते ! स्वीकुरुष्व नमोऽस्तु ते ॥७॥ शुद्धस्नानम् ।
भासुरं रक्तवर्णं च हेमसूत्रैर्भविभूषितम् ।
सीते ! गृहाण वस्त्रं च नमस्ते सुषमाम्बुधे ! ॥८॥ वस्त्रम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुङ्कुमागरुयुक्तं च संयुक्तं चन्दनादिभिः ।
गन्धं गृहाण सीते ! त्वं नमोऽनुग्रहकारिणि ! ॥९॥ गन्धम् ।
हरिद्रां कुङ्कमं चाथ सिन्दूरं कज्जलं तथा ।
दत्तं सौभाग्यद्रव्यं च गृहाण परमेश्वरि ! ॥१०॥ सौभाग्यद्रव्यम्
संस्कृतं विविधैर्गन्धै रक्तवर्णं मनोहरम् ।
स्वीकुरुष्व गुलालं च श्रीसीते ! रामभामिनि ! ॥११॥ गुलालम् ।
मणिमुक्ताफलैः सीते ! मङ्गलतन्तुभिर्युतम् ।
कम्बुकण्ठि ! गृहाणेदं कण्ठसूत्रं मनोहरम् ॥१२॥ कण्ठसूत्रम् ।
विविधं भूषणं रम्यं हेमरत्नैश्च निर्मितम् ।
मातर्गृहाण दत्तं च रामाभिन्नस्वरूपिणि !॥१३॥ भूषणम् ।
सुगन्धोनि सुरम्याणि पुष्पाणि विविधानि च ।
सीते ! गृहाण दत्तानि नमस्ते सर्वशोभिणि !॥१४॥ पुष्पम् ।
चन्दनागुरुसंयुक्तगुग्गुलादिसमन्वितम् ।
धूपं गृहाण हे सीते ! नमस्ते कीर्त्तिशालिनि! ॥१५॥धूपः
घृतवर्त्तिसमायुक्तं रम्यज्वालासमन्वितम् ।
दत्तं गृहाण दीपं श्रीसीते ! सूर्यादिभासिनि !॥१६॥ दीपः ।
मधुरं घृतपक्वं च पूपादि पायसं तथा ।
नैवेद्यं गृह्यतां सीते ! विविधैर्व्यञ्जनैर्युतम् ॥१७॥ नैवेद्यम् ।
श्रीसरयूजलं शुद्धं निर्मलं पुष्पवासितम् ।
दत्तं गृहाण सीते ! त्वं नमस्ते वेदवन्दिते ॥१८॥ जलम् ।
सुन्दरं शोधितं पक्वं सुधावन्मधुरं फलम् ।
सीते ! गृहाण चाम्रादि नमस्तेऽमोघदर्शने ! ॥१९॥ फलम्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सद्गन्धेन च शुद्धेन सरयूवारिणा वरम् ।
अमोघाराधने ! सीते ! गृहाणाचमनीयकम् ॥२०॥ आचमनम्
खादिरैलादिसंयुक्तं शुद्धं पूगोफलान्वितम् ।
कृपाब्धे ! कृपया सीते ! ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥२१॥ ताम्बूलम्
चामरद्वयसंयुक्तं श्वेतं छत्रं च सुन्दरम् ।
दत्तं गृहाण हे सीते ! नमस्ते सकलेश्वरि !॥२२॥ राजोपचराः ।
घृताक्तवर्त्तिकर्पूरज्वालया च समन्वितम् ।
नीराजनं गृहाणेदं मातः ! सीते ! नमोऽस्तु ते ॥२३॥ नीराजनम्
दिव्यैः सुवर्णमाल्यैश्च दत्ता पुष्पाञ्जलिर्मया ।
जगन्मातर्गृहाण त्वं नमस्ते रामवल्लभे !॥२४॥ पुष्पाञ्जलिः ।
मयाऽतिश्रद्धया दत्तं श्रीफलं मधुरं बहु ।
सदक्षिणं गृहाणेदं कृपया हे कृपाम्बुधे ! ॥२५॥ श्रीफलम् ।
जन्मान्तरकृतं पापमेतज्जन्मकृतं तथा ।
सर्वं तद् विलयं यातु श्रीमत्सीताप्रदक्षिणात् ॥२६॥ प्रदक्षिणा ।
यथालब्धोपचारैस्ते सीते पूजा मया कृता ।
पूर्णतां यातु सा मातरपराधं क्षमस्व मे ॥२७॥ क्षमापनम्
जगतकर्त्र्यै नमः सीते जद्धर्त्र्यै नमस्तथा ।
जगतो हारिकायै च तारिकायै नमोऽस्तु ते ॥२८॥
भगवत्यै नमस्तेऽस्तु श्रीसीतायै नमोऽस्तु ते ।
सर्वेश्वर्यै नमस्ते श्रीरामपत्नयै नमोऽस्तु ते ॥२९॥
मन्त्रराजप्रदां वन्दे वन्दे सिद्धिप्रदायिनीम् ।
भक्तिमुक्तिप्रदां वन्दे वन्दे चानन्ददायिनीम् ॥३०॥ नमस्कार ।
इतिलघुश्रीसीतोपासनाङ्गचतुष्टये प्रथममङ्गम् ॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आनन्दभाष्यकारजगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्योक्ताः

षोडशार्चोपचाराः

आवाहनासनाभ्यां च पाद्यार्घ्याचमनैस्तथा ।
स्नानवस्त्रोपवीतैश्च गन्धपुष्पसुधूपकैः ॥
दीपनैवेद्यताम्बूलप्रदक्षिणविसर्जनैः ।
षोडशार्चाप्रकारैस्तमेतैरर्चेत् सदा सुधीः ॥

—०—

पण्डितसम्राट्श्रीवैष्णवाचार्यनिर्मितं

श्रीजानकीकवचरत्नम् ।

स्वप्ने जागरणे चाथ सुषुप्तावप्तावप्यहर्निशम् ।
सर्वतः सर्वथा पातु जननी जानकी सदा ॥१॥
प्राच्यां चाथ प्रतीच्यां हि पातु मां पापहारिणी ।
उदीच्यां भूमिजा पातु चावाच्यां देवपूजिता ॥२॥
आग्नेय्यां पातु हेमाङ्गी नैर्ऋत्यां रामवल्लभा ।
वायव्यां वायुजाऽन्विष्टा चैशान्यां निखिलेश्वरी ॥३॥
वामेऽग्रे दक्षिणे पृष्ठे पातु सर्वत्र मुक्तिदा ।
मारुतेर्वरदा पातु स्वास्थ्यं मारुतिवन्दिता ॥४॥
देहं पातु हि वैदेही मतिं पातु मतिप्रदा ।
सुखं तु सुषमासिन्धुः पातु कीर्त्तिं च कीर्त्तिदा ॥५॥
वैष्णवभाष्यकारश्रीवैष्णवाचार्यनिर्मितम् ।
पठनाद् धारणाद् वापि कवचं विघ्नघातकम् ॥६॥
इतिलघुश्रीसीतोपसनाङ्गचतुष्टये द्वितीयमङ्गम् ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीवैष्णवमताब्जभास्करे श्रीजानकीनवमीनिर्णयः ।

पुष्यान्विवतायां तु कुजे नवम्यां
श्रीमाधवे मासि सिते हलेन ।
कृष्टा क्षितिः श्रीजनकेन तस्याः
सीताऽऽविरासीद् व्रतमत्र कुर्यात् ॥३॥

पण्डितसम्राट्श्रीवैष्णवाचार्यकृता

श्रीसीता नमस्कार माला ।

भूमिजायै नमस्तुभ्यं सीतादेव्यै नमोऽस्तु ते ।
रामप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्ते रामवल्लभे ॥१॥

सर्वेश्वरि ! नमस्तुभ्यं नमस्ते करुणाब्धये ।
दुःखहन्त्रि ! नमस्तुभ्यं सुखदात्रि ! नमोऽस्तु ते ॥२॥

जगत्कर्त्रि नमस्तुभ्यं जगद्धर्त्रि ! नमोऽस्तु ते ।
जगद्हर्त्रि ! नमस्तुभ्यं मुक्तिदात्रि ! नमोऽस्तु ते ॥३॥

वसुधात्मजे नमस्तुभ्यं वसुदायै नमोऽस्तु ते ।
नमः शरण्यवर्यायै नमो दारिद्र्यनाशिनि ! ॥४॥

नमस्ते वेदवेद्यायै भक्तिलभ्ये ! नमोऽस्तु ते
नमस्ते वेदवन्द्यायै सर्वज्ञायै नमोऽस्तु ते ॥५॥

नमस्ते दिव्यदेहायै नमस्ते गुणसिन्धवे ।
नमस्ते दोषशून्यायै नमो लावण्यसिन्धवे ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नमश्चामोघपूजायै ह्यमोघस्तुतये नमः ।
नमश्चामोघभक्तैश्च ते नमश्चामोघवन्दने ! ॥७॥
नमस्ते ज्ञेयवर्यायै ध्येयवर्ये ! नमोऽस्तु ते ।
नमो वदान्यवर्यायै रामपत्न्यै नमोऽस्तु ते ॥८॥
नमो निग्रहशून्यायै नमोऽनुग्रहशालिनि ! ।
नमोऽवगुणशून्यायै नमः सद्गुणशालिनि ॥९॥
नमस्ते साधुशीलायै नमस्ते कीर्त्तिशालिनि ।
नमस्ते मन्त्रदात्र्यै च नमस्ते मारुतेर्गुरो ! ॥१०॥
नमस्ते विश्वमूलायै नमस्ते विश्वरक्षिणि ।
नमो विश्वशरण्यायै नमस्ते विश्वरक्षिणि ॥११॥
नमः प्रपदनीयायै भजनीये नमोऽस्तु ।
नमस्ते कीर्त्तनीयायै स्मरणीये नमोऽस्तु ते ॥१२॥
नमस्ते पूज्यवर्यायै स्तुतवर्ये नमोऽस्तु ते ।
नमस्ते वन्द्यवर्यायै नमस्तेऽमोघदर्शने ॥१३॥
नमोऽचिच्चिद्विशिष्टायै नमोऽचिच्चित्स्वरूपिणि ।
नमोऽचिच्चिद्विभिन्नायै नमोऽचिच्चिच्छरीरिणि ॥१४॥
नमः कारणरूपायै कार्यरूपिणि ते नमः ।
नमो जगज्जनन्यै ते जगद्रूपिणि ते नमः ॥१५॥
नमस्त्रिदेववन्द्यायै त्रिदेवीवन्दिते नमः ।
नमः परात्परायै ते नमः सर्वावतारिणि ॥१६॥
नमो विभवरूपायै व्यूहरूपिणि ! ते नमः ।
नमस्तेऽर्चास्वरूपिण्यै नमोऽन्तर्यामिरूपिणि ॥१७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नमस्ते विभुदे देवि नमस्ते विभुरूपिणि ।
नमस्ते विभ्वभिन्नायै नमस्ते विभुवल्लभे ॥१८॥
नमस्ते विभुलोकायै नमस्ते जनकात्मजे ।
नमस्ते जानकीदेव्यै नमो जनकनन्दिनि ! ॥२०॥
नमो मैथिलकन्ये ते नमोऽस्तु मैथिलात्मजे ।
नमो मैथिलि ! मातस्ते मिथिलेशसुते नमः ॥२१॥
मात्रे नमोऽस्तु सीतायै नमो वात्सल्यवारिधे ।
नमस्ते श्रुतिगीतायै नमस्ते क्षितिनन्दिनि ! ॥२२॥
नमस्ते मुक्तसेव्यायै नमस्ते मुक्तवन्दिते ।
नमस्ते विघ्नहन्त्र्यै च नमस्ते मङ्गलप्रदे ! ॥२३॥
रामाभिन्ने नमस्तेऽस्तु श्रियः श्रियै नमोऽस्तु ते ।
नमस्ते दिव्यवस्त्रायै नमस्ते दिव्यभूषणे ॥२४॥
नमः स्वयम्प्रकाशायै नमो भास्करभासिनि ।
नमः प्रपत्तिशिक्षित्र्यै नमः प्रपन्नरक्षिणि ! ॥२५॥
नमस्ते सत्यसङ्कल्पे नमस्ते सर्वशेषिणि ।
नमश्चावाप्तकामायै सर्वशक्ते नमोऽस्तु ते ॥२६॥
भगवत्यै नमस्तेऽस्तु मन्त्रराजप्रदे नमः ।
नमस्ते दिव्यलोकायै नमस्ते दिव्यपार्षदे ॥२७॥
वैष्णवभाष्यकरश्रीवैष्णवाचार्य निर्मिता ।
स्तान्नस्कारमाहात्म्यं श्रीसीताम्बाप्रसादिनी ॥२८॥
इतिलघु श्रीसीतोपासनाङ्गचतुष्टये तृतीयमङ्गम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पण्डितसम्राट् श्रीवैष्णवाचार्यानिर्मितं

श्रीसीतानामशतकम् ।

सीता रामप्रिया सीता सीता सीता श्रुतिश्रुता ।
सीता दिव्यतनुः सीता सीता सीता च भूमिजा ॥१॥
सीता दिव्यगुणा सीता सीता सीता च मैथिली ।
सीताऽखिलेश्वरी सीता सीता सीता विदेहजा ॥२॥
सीता सुरस्तुता सीता सीता सीता मुनिस्तुता ।
सीता बुधस्तुता सीता सीता सीता गुणाम्बुधिः ॥३॥
सीता हि सर्जिनी सीता सीता सीता सुपालिनी ।
सीता च हारिणी सीता सीता सीता हि तारिणी ॥४॥
सीता च सर्ववित् सीता सीता सीता दयाम्बुधिः ।
सीता दुःखहरी सीता सीता सीता सुखप्रदा ॥५॥
सीता हि सिद्धिदा सीता सीता सीता च बुद्धिदा ।
सीता हि भक्तिदा सीता सीता सीता च मुक्तिदा ॥६॥
सीता ज्ञेयोत्तमा सीता सीता सीता परात्परा ।
सीता ध्येयोत्तमा सीता सीता सीता वराश्रयः ॥७॥
सीता सीता जगन्माता सीता सीता जगत्पिता ।
सीता सीता जगद्बन्धुः सीता सीता जगत्सखा ॥८॥
जगन्निमित्तमूला च श्रीमद्रामप्रसादिका ।
सीता मन्त्रप्रदाऽऽचार्याच्छ्रीसम्प्रदायप्रवर्त्तिका ॥९॥
वैष्णवभाष्यकारश्रीवैष्णवाचार्यनिर्मितम् ।
पाठाच्च शतकं भूयाच्छ्रीमत्सीताप्रसादकम् ॥१०॥

इतिलघुश्रीसीतोपासनाङ्गचतुष्टये चतुर्थमङ्गम् ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पण्डितसम्राटश्रीवैष्णवाचार्यकृतः

श्रीरामदयितास्तवः

न जाने त्वत्तोऽन्यं जननि ! हि निजोद्धारजनकं
तवाग्रे चोद्धर्तुं पतित इहचात्रास्मि हि ततः ।
कुरूद्धारं मातर्मम निजजनस्यापि कृपया
श्रयेऽहं त्वत्पादौ प्रणतसुखदे ! रामदयिते ! ॥१॥
महानज्ञोऽहं वै सकलगुणहीनः कुमतिमान्
हतो मद्दुर्भाग्यैः सकलविधिदीनः, कुकृतिमान् ।
विरक्तः सत्सङ्गात् कुमतिजनसङ्गे च निरतः
प्रपन्नस्ते पादौ जननि ! करुणाब्धेऽतिमृदुलौ ॥२॥
अहोऽस्मिन् संसारे जननि ? तव तुल्या न जननी
कुपूत्रं मत्तुल्यं सततमिह या रक्षति जनम् ।
सुधीन्द्रोक्तिस्त्वत्तो भवति चरितार्था बुधमता
"कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति" ॥३॥
उमाश्रीब्रह्माण्यो जननि तव चांशादिह मता
जगत्सृष्टिस्थेमप्रलयसमुदायस्तव कृतिः ।
त्वमेकैका मातर्मतिवसुविहीनं ह्यपि जनं
भवाब्धे रक्षित्वा त्वमृतपद दानाय यतसे ॥४॥
चतुर्वक्त्रैर्ब्रह्मा प्रभवति न वक्तुं तव गुणान्
न पञ्चास्यौ शम्भुः कथयितुमलं ते गुणनिधिम् ।
गणेशो वाण्यां वा गुणकथनशक्तिश्च नहि ते
कथं मत्तुल्यः स्यात् स्तुतिकरणयोग्यो जननि ! ते ॥५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वैष्णवभाष्यकारश्रीवैष्णवाचार्यनिर्मितः ।
स्तवोऽयं भवतात् पाठात् सर्वकल्याणकारकः ॥६॥

—०—

पाण्डितसम्राट्स्वामिश्रीवैष्णवाचार्यकृतः

श्रीजगन्मातृस्तवः ॥

वन्दे वेदनि वेदितां गुणनिधिं वन्दे सुचिन्त्यां परां
वन्दे शक्तिसमन्वितां भगवतीं वन्दे जगत्सर्जिकाम् ।
वन्दे चाखिललोकलीनकरणीं वन्दे जगत्पालिनीं
वन्दे श्रीजगदीशरामदयितां वन्दे जगन्मातरम् ॥१॥

वन्दे शास्त्रसमन्वितां सुखमयीं वन्दे च सर्वेश्वरीं
वन्देऽहं चिदचित्तनुं सकलगां वन्दे च रामात्मिकाम् ।
वन्दे श्रीजगदंशिनीं सुरुचिरां वन्देऽखिलान्तःस्थितां
वन्दे श्रीजगदीशरामदयितां वन्दे जगन्मातरम् ॥२॥

वन्देऽहं क्षितिजां च कोपरिहितां वन्दे क्षमाशालिनीं
वन्दे पापविनाशिनीं शुचितमां वन्दे परां भक्तिदाम् ।
वन्दे दिव्यशरीरिणीं शासिमुखीं वन्दे शुभां मुक्तिदां
वन्दे श्रीजगदीशरामयिदतां वन्दे जगन्मातरम् ॥३॥

वन्दे ब्रह्मशिवादिसंस्तुतपदां वन्दे परां देवतां
वन्दे मारुतिवन्दितां च वरदां वन्दे दयावारिधिम् ।
वन्दे स्वात्मसमर्पिणामभयदां वन्दे शरण्यां परां
वन्दे श्रीजगदीशरामदयितां वन्दे जगन्मातरम् ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वन्दे भास्करभासिनीं स्वमहसा वन्दे जगच्छेषिणीं
वन्दे द्वन्द्वविवर्जिता सुखकरीं वंन्दे स्वनाथानुगाम् ।
वन्दे श्रीमिथिलाधिपस्य तनयां वन्दे महावत्सलां
वन्दे श्रीजगदीशरामदयितां वन्दे जगन्मातरम् ॥५॥
वैष्णवभाष्यकारश्रीवैष्णवाचार्यनिर्मितः ।
स्तवोऽयं भवतात् पाठात् सर्वथा सुखदायकः ॥६॥

अथ श्रीवशिष्टसंहितागतं श्रीहनुमत्प्रोक्तं

श्रीसीताऽष्टाक्षरस्तोत्रम् ।

श्रीअङ्गद उवाच

लङ्कायां हि प्रचण्डाग्नेर्यत्पाठाद्रक्षितोऽसि तत् ।
सीताऽष्टाक्षरस्तोत्रं वक्तुमर्हसि मारुते ! ॥१॥

श्रीहनुमानुवाच

रामभक्त ! महाभाग ! सन्मते ! बालिनन्दन !
श्रीसीताऽष्टाक्षरस्तोत्रं सर्वभीतिहरं शृणु ॥२॥
श्रीमद्रामप्रिया पुण्या श्रीमद्रामपरायणा ।
श्रीमद्रामादभिन्ना च श्रीसीता शरणं मम ॥३॥
शारण्या श्रितरक्षित्री भास्करादेर्विभासिका ।
आकारत्रयशिक्षित्री श्रीसीता शरणं मम ॥४॥
शक्तिदा शक्तिहीनानां भक्तिदा भक्तिकामिनाम् ।
मुक्तिदा मुक्तिकामानां श्रीसीता शरणं मम ॥५॥
ब्रह्माण्युमारमाऽऽराध्या ब्रह्मेशादिसुरस्तुता ।
वेदवेद्या गुणाम्भोधिः श्रीसीता शरणं मम ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शून्या हि निग्रहेणाथानुग्रहाब्धिः सुवत्सला ।
जननी सर्वलोकानां श्रीसीता शरणं मम ॥७॥

चिदचिद्भ्यां विशिष्टा च सच्चिदानन्दरूपिणी ।
कार्यकारणरुपा च श्रीसीता शरणं मम ॥८॥

विशोका दिव्यलोका च विभ्वी दिव्यविभूषणा ।
दिव्याम्बरा च दिव्याङ्गी श्रीसीता शरणं मम ॥९॥

कर्त्री च जगतो भर्त्री हर्त्री जनकनन्दिनी ।
जगद्धर्त्री जगद्योनिः श्रीसीता शराणं मम ॥१०॥

सवकर्मसमाराध्या सर्वकर्मफलप्रदा ।
सर्वेश्वरी च सर्वज्ञा श्रीसीता शरणं मम॥११॥

नित्यमुक्ततस्तुता स्तुत्या सेविता विमलादिभिः ।
अमोघपूजनस्तात्रा श्रीसीता शरणं मम ॥१२॥

कल्पवल्लली हि दीनानां सर्वदारिद्र्यनाशिनी ।
भूमिजा शान्तिदा शान्ता श्रीसीता शरणं मम ॥१३॥

आपदां हारिणी चाथ कारिणी सर्वसम्पदाम् ।
भवाब्धितारिणी सेव्या श्रीसीता शरणं मम ॥१४॥

श्रीवशिष्ठ उवाच

पाठाद् हनुमता प्रोक्तं नित्यमुक्तेन श्रद्धया ।
श्रीसीताऽष्टाक्षरस्तोत्रं भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणाम् ॥१२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवस्तु स च तत्रैवाकस्मादन्तर्हितोऽभवत् ।
राजाऽपि प्रययौ तस्माद्धर्षशोकसमन्वितः ॥१०३॥
राजधानीं समागत्य राज्यकार्याणि मन्त्रिणि ।
संन्यस्य प्रययौ शीघ्रं गङ्गायास्तीरमुत्तमम् ॥१०४॥
गजोक्तविधिना राजा सर्वं चक्रे प्रयत्नतः ।
शापात् पापाच्च निर्मुक्तः पुत्रं कालेन चाप्तवान् ॥१०५॥
एवं माहात्म्यसंयुक्तो राममन्त्रो विशेषतः ।
मोक्षप्रदो महामन्त्रो मन्त्रराजः प्रशस्यते ॥१०६॥

गजदेव तो अचानक वहीं अलक्षित हो गया। राजा भी वहां से हर्ष और शोक से युक्त होकर अपने घर चला आया ॥१०३॥

अपनी राजधानी आकर राज्य के सब कार्य मन्त्रिके अधीन कर शीघ्र गङ्गाजी के तीर की यात्रा की ॥१०४॥

राजा ने गज के वचनानुसार सब कार्य बहुत यत्न से किया शाप और पाप से रहित होकर समय पर पुत्र भी प्राप्त किया ॥१०५॥

ऐसे महात्म्य से युक्त श्रीराममहामन्त्र राज है यह विशेषरूप से मोक्षदायक महामन्त्र मन्त्रराज कहा जाता है इच्छानुसार अन्यफल तो देता ही है उपासनानुसार ॥१०६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीसीता रामतः प्राप्य सा ददौ वायुसूनवे ।
ब्रह्मणे स ददात्वित्थं मन्त्रराजपरम्परा ॥१०७॥

प्रातरुत्थाय ये नित्यं सततं श्रद्धयाऽन्विताः ।
पठन्तीमां पर प्रीत्या मन्त्रराजपरम्पराम् ।
तेऽपि ब्रह्मपदं यान्ति मुक्त्वा देहमिमं खलु ॥१०८॥

यह मन्त्रराज श्री सीता जी ने सर्वेश्वर श्री राम जी से प्राप्त किया उन्होंने श्री हनुमान् जी को दिया इस श्री राममहामन्त्र को श्री हनुमानजी ने श्री ब्रह्मा जी को दिया, इसप्रकार से श्री-राममन्त्रराजा की परम्परा चली आती है गीतानन्दभाष्यमें जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी ने इसी अपनी परम्परा का इस प्रकार उल्लेख किया है ।

"श्रीराम जनकात्मजामनिलज वेधोवसिष्ठामृषी
योगीशञ्च पाराशरं श्रुतिविदं व्यासं जितक्षं शुकम् ।
श्रीमन्तं पुरुषोत्तमं गुणनिधिं गङ्गाधराद्यान्यतीञ्
छ्रीमद्राघवदेशिकञ्च वरदं स्वाचार्यवर्यं श्रये" ॥१०७॥

प्रातःकाल में उठकर जो हमेशा श्रद्धायुक्त होकर इस श्री राममन्त्रराज की परम्परा बहुत प्रीति से बढते हैं वे भी इस पाञ्चभौतिक शरीर को छोड़कर ब्रह्मस्थान श्रीसाकेत धाम को प्राप्त करते हैं ॥१०८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋषय ऊचुः

राममन्त्रस्य माहात्म्यं श्रुत्वा वेदविदांवर ! ।
कृतार्थाः कृतकृत्याश्च सर्वथैवाधुना वयम् ॥१०९॥

इति श्रीपाञ्चरात्रे श्रीमद्वाल्मीकिसंहितायां
कथामुखेन राममन्त्रमाहात्म्य वर्णनं नाम
तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

हे वेदवेत्ताओं में श्रेष्ठ मुनीश्वर ! आप से इस श्रीराममन्त्र का महात्म्य सुनकर इस समय में हमसब सबप्रकार से कृत कृत्य हो गये हैं ॥१०९॥

इति श्री पाञ्चरात्रे श्रीमद्वाल्मीकि संहितायां श्री राममन्त्र माहात्म्य वर्णनात्मकस्य तृतीयाध्यायस्य स्वामीरामेश्वरानन्दाचार्य-कृत प्रकाश हिन्दी व्याख्या ॥३॥

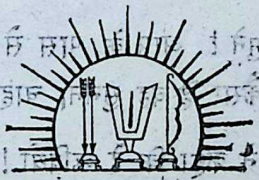

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाल्मीकिसंहितायां चतुर्थोऽध्यायः

ऋषय उचुः

भगवंस्ते सुखोद्गीर्णं निपीय वचनामृतम् ।
तृप्तिर्न जायतेऽस्माकं शुश्रूषा चैव वर्धते ॥१॥

अतः श्रोतुं समिच्छामः सकाशात्ते महामुने ! ।
वैष्णवैः कीदृशं पुण्ड्रं कार्यं विष्णुपरैरिति ॥२॥

वाल्मीकिरुवाच

धर्मतत्वप्रिया यूयमृषयो ज्ञानवेदिनः ।
तस्माद्वक्ष्यामि युष्मभ्यं पुण्ड्रं कार्यं तु यादृशम् ॥३॥

चतुर्णामपि वर्णानां यथा ब्राह्मण उत्तमः ।
सर्वेषामपि धर्माणां तथा वैष्णव उच्यते ॥४॥

ऋषियों ने कहा कि हे भगवन् ! आप के मुख से निकला हुआ वचन रूप अमृत पीकर हमें तृप्ति नहीं होती है, आप के वचनामृत के सुनने की इच्छा बढ रही है ॥१॥

अतः हे महामुने ! आप के पास से विष्णुपरायण वैष्णवों का धारणीय पुण्ड्र कैसा है वह सुनना चाहते हैं ॥२॥

वाल्मीकि जी ने कहा कि हे ऋषियों ! आप धर्म के तत्त्व के प्रेमी और ज्ञान के जानने वाले हैं, इसकारण से आप को जैसा पुण्ड्र वैष्णवों का कर्तव्य है वह कहूँगा ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर्वेषामपि वेदानां पुराणानां च सर्वथा ।
परहिंसा न कर्तव्याऽत्रैकमत्यं च विद्यते ॥५॥

अहिंसा परमो धर्मोऽहिंसा परमं व्रतम् ।
अहिंसा परमं ध्येयं नास्ति धर्मस्ततोऽधिकः ॥६॥

स एव परमो धर्मः केवलं पृथिवीतले ।
वैष्णवैः पाल्यते नित्यं तस्माद् वैष्णव उत्तमः ॥७॥

सुवर्णानि ददानानामश्वमेधशतानि च ।
कुर्वाणानां नृणां धर्मो जायते यस्तु नित्यशः ॥८॥

स धर्मः प्राप्यते नित्यं परहिंसा विवर्जिता ।
मानवैस्तु जगत्यस्मिन्नास्ति कोऽप्यत्र संशयः ॥९॥

चार वर्णों में जैसे ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं वैसे सवधर्मों में वैष्णवधर्म उत्तम कहा जाता है ॥४॥

सभी वेदों का और पुराणों का एक मत है कि–परहिंसा सबप्रकार से बर्जित है ॥५॥

अहिंसा परमधर्म है और परम व्रत है और अहिंसा परमध्यान योग्य है अहिंसा से बड़ा अन्य धर्म नहीं है ॥६॥

वही अहिंसाधर्म पृथिवीतल में सीर्फ वैष्णवों से पाला जाता है इस हेतु से वैष्णव श्रेष्ठ हैं ॥७॥

सुवर्णों का दान करने से सौ अश्वमेध यज्ञ करने से मनुष्यों को जो धर्म इसलोक में सर्वदा होता है ॥८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेवेष्टिदं जगत्सर्वं यः स विष्णुः स्मृतो बुधैः ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुसेवापरायणः ॥१०॥
वैष्णवा यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति देवताः ।
स्वयं गच्छति विष्णुश्च ह्यष वेदार्थसङ्ग्रहः ॥११॥
गंगा च यमुना चैव कावेरी च सरस्वती ।
सरयूनर्मदा सर्वास्तीर्थनद्यः प्रयान्त्यपि ॥१२॥
यत्रैव वैष्णवाः सन्ति तत्रायोध्या च काशिका ।
मथुराऽवन्तिका तत्र पुर्यः सर्वस्य पाविकाः ॥१३॥

वह धर्म पर हिंसा रहित मनुष्य प्राप्त कर सकते हैं इसमें कोई संदेह नहीं है ॥९॥

जो सब जगत् को व्याप्त करते हैं वे पण्डितों से विष्णु कहे जाते हैं विष्णु की सेवा में तत्पर जन सब पापों से मुक्त हो जाता है ॥१०॥

वैष्णव जहां जाते हैं वहाँ सभी देवता जाते हैं और विष्णु खुद वहां जाते हैं यह वेदार्थों का संग्रह सार है ॥११॥ गङ्गा यमुना कावेरी और सरस्वती सरयू और नर्वदा सभी तीर्थ नदियाँ भी वहाँ जाती हैं, ॥१२॥

जहाँ वैष्णव रहते हैं, वहीं अयोध्या काशी मथुरा और अवन्तिका प्रभृति मन को पवित्र करने वाली पुरी भी हैं ॥१३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूतप्रेतपिशाचाद्या ये च राक्षसयोनयः ।
सर्वे तस्मात् पलायन्ते यत्र गच्छन्ति वैष्णवाः ॥१४॥

रमन्ते योगिनो यस्मिन् स रामः परिकीर्तितः ।
परिवेष्ट्य स्थितः सर्वं सैव विष्णुः समीरितः ॥१५॥

स एव भगवान् कृष्णो गोपी गोपानुरञ्जकः ।
तस्य विष्णो महा बाहोर्भक्तानां पुण्ड्रसंग्रहः ॥१६॥

उच्यते श्रूयतां सम्यक् सावधानेन चेतसा ।
ऊर्ध्वपुण्ड्रं सदा कार्यं विष्णुभक्तिपरायणैः ॥१७॥

पातित्यमन्यथा प्राप्य रौरवं नरकं व्रजेत् ।
ऊर्ध्वपुण्ड्रधरो विप्रो विष्णुध्यानपरायणः ॥१८॥

वीतपापः स धर्मात्मा स्वर्गलोकं समश्नुते ।
हरेः पादाकृतिं कुर्यान्मध्यच्छिद्रसमन्वितम् ॥१९॥

जिसमें योगीजन रमण करते हैं वह श्री राम है, श्रीराम ही सबको परिवेष्टित कर के स्थित है अतः वहीं विष्णु इस नामसे कहा गया है, ॥१४॥

वहीं श्री राम श्री कृष्ण रूप में गोपी गोपों का अनुरञ्जक है ॥उन महाबाहु विष्णु के भक्तों के पुण्ड्रों का संग्रह रूप से कहा जाता है उसे सावधान मन से अच्छी तरह सुनिये॥१७।

विष्णु की भक्ति में तत्परजनों को सदा ऊर्ध्वपुण्ड्र करना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऊर्ध्वपुण्ड्रं स्वमोक्षाय दुःखनाशाय सर्वथा ।
आचम्यैवोर्ध्वपुण्ड्रंतु शुद्धया च मृदा सदा ॥२०॥

कुर्याच्चाथान्तरालेषु हरिद्राधारणं तथा ।
रैवतकाच्चित्रकूटाद् यादवाद्रेश्च वैष्णवाः ॥२१॥

मृत्तिकाहरणं कुर्युरूर्ध्वपुण्ड्राय सर्वदा ।
गंगायाः सूर्यकन्यायाः सरय्वा वा मृदा सदा ॥२२॥

ऊर्ध्वपुण्ड्रं शुभं कुर्युर्वैष्णवा धर्मरक्षकाः ।
पूर्वं सिंहासनं कुर्युस्ततः पार्श्वद्वयं पुनः ॥२३॥

चाहिए यदि वह ऊर्ध्व पुण्ड्र नहीं करे तो पातित्य प्राप्त कर अर्थात् प्रतित होकर रौरव नरक में जायेगा ॥१८॥

विष्णुभक्ति परायण ब्राह्मण ऊर्ध्वपुण्ड्रधारी हो तो पापरहित वह धर्मात्मा स्वर्ग लोक को प्राप्त करता है ॥१९॥

हरि के चरणाकार मध्यच्छिद्र से युक्त ऊर्ध्व पुण्ड्र करने वाले का सब प्रकार के दुःखनाश होकर वह मोक्षभागी होता है ॥२०॥

पहले आचम कर विशुद्ध मिट्टी से ही हमेशा ऊर्ध्व पुण्ड्र करे और बीच में हलदी का धारण करे जो कुङ्कुम वा श्री है हलदी में नीबू के रस देने से लाल हो जाता है वही श्री है ॥२१॥

रैवतक चित्रकूट यादव गिरि से वैष्णव लोग सर्वदा ऊर्ध्व पुण्ड्र के लिए मिट्ठी ले आवे ॥२२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ततः पश्चाच्च तन्मध्ये लिखेयुः सुन्दरीं श्रियम् ।
रजन्या श्रियमालिख्य मृदावाऽपि च शुक्लया ॥२४॥
वैष्णवो मुक्तिमाप्नोति सर्वकल्मषवर्जितः ।

ऋषय ऊचुः

भगवंस्त्वद्वचः श्रुत्वाऽभवामच्छिन्न संशयाः ॥२५॥
ऊर्ध्वपुण्ड्रस्य भेदोऽन्यः स्याद्यदीह तमप्यलम् ।
श्रोतुमिच्छामआख्याहि सर्वसामर्थ्यवानसि (वन्मुने) ॥२६॥

वाल्मीकिरुवाच

एकदा सुखमासीनं वैकुण्ठे च रघूत्तमम् ।
वायुसूनुर्महातेजा ब्रह्मचारि जितेन्द्रियः ॥२७॥

अथवा गंगा यमुना और सरयू नदी की मिट्टी से धर्मरक्षक वैष्णव शुभ ऊर्ध्व पुण्ड्र करे ॥२३॥

पहले सिंहासन करे बाद में पार्श्वद्वय करे उसके बाद उसके बीच में अच्छी तरह से श्री लगावें ॥२४॥

हलदी से वा श्वेत मिट्टी से श्री तीलक करने वाला श्री वैष्णव सब पापों से रहित हो कर मोक्ष पाता है ॥२५॥

ऋषियों ने कहा--कि हे भगवन्! आपके वचन सुनकर छिन्न संदेह हम हो गये । यदि ऊर्ध्व पुण्ड्र का दुसरा भेद हो तो वह भी हम सुनना चाहते हैं आप सर्व सामर्थ्यवान् हैं अतः वह भी अच्छी तरह कहिये । ॥२६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एतादृशान्बहून्प्रश्नान्पप्रच्छ (चकार) कपिकुञ्जरः ।
श्रीरामस्तोषयामास तं तथाऽहं तथर्षयः ॥२८॥
सर्वं वदामि युष्मभ्यं शृणुध्वं मुनिसत्तमाः ।
तत्श्रुत्वाच्छिन्नसंदेहा यूयं तन भविष्यथ ॥२९॥

भगवद्वचनं हनूमन्तं प्रति

ऊर्ध्वपुण्ड्रस्य भेदास्तु बहवः सन्ति शाश्वताः ।
तानहं ते वदिष्यामि श्रयतां (शृणुत्वं) कपिकुञ्जर ? ॥३०॥
मद्भक्ता द्विविधाः प्रोक्ताः शुद्धसत्वः सुबुद्धयः ।
मामेव केवलं लोके भजन्ते जानकीं विना ॥३१॥
जानकीसहितं मां तु भजन्ते सर्वदाऽपरे ।
एतेष्वपि च केचित्तु भक्तिमन्तोऽधिकं मयि ॥३२॥

बाल्मीकि जी ने कहा—कि—एक समय में वैकुण्ठ में सुख पूर्वक बैठे श्री राम जी से महातेजस्वी ब्रह्मचारी जितेन्द्रि वानरश्रेष्ठ श्री हनुमान जी ने ऐसे बहुत प्रश्न किये तब श्री रामजी ने उन्हें जैसे सन्तुष्ट किये वैसे ही हे ऋषियों मुनि श्रेष्ठों आप से कहता हूँ सुनिये उसे सुनकर आप नष्ट संदेह हो जायेंगे ॥२७–२८–२९॥

श्री रामवचन श्री हनुमान जी के प्रति—

ऊर्ध्वपुण्ड्र के भेद बहुत हैं तथा सार्वदिक हैं, हे कपिश्रेष्ठ उन भेदों को आपको कहता हूँ सुनिये ॥३०॥

मेरे भक्त दो प्रकार के हैं शुद्ध सत्व और सुबुद्धि । प्रथम मुझे श्री सीता रहित भजते हैं दूसरे भक्त सीता श्री सहित मुझे सदा भजते हैं ॥३१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जानक्यामेव चान्येषां दृढा भक्तिः प्रजायते ।
मदनुरागिणो भक्ता धारयन्ति न च श्रियम् ॥३३॥
सीताभक्ताः प्रकुर्वन्ति मध्ये बिन्दुं श्रियं शुभाम् ।
येषां सदाऽऽवयोरेव भक्तिर्भवति वै समा ॥३४॥
ते शुक्लां रक्तवर्णाञ्च दीर्घां विदधति श्रियम् ।
कृष्णरूपधरं मां ये वैष्णवाः समुपासते ॥३५॥
ते कृष्णं चापि रक्तं चाप्यूर्ध्वपुण्ड्रं सबिन्दुकम् ।
कुर्वन्ति च महाभागा भक्ति भावसमन्विताः ॥३६॥
इति श्रीपाञ्चरात्रे श्री वाल्मीकिसंहितायामूर्ध्वपुण्ड्र
निरूपणं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥

इन भक्तों में कोई मुझ में अधिक भक्तिवाले होते हैं। तथा दूसरे की भक्ति सीता में ही दृढ होती है ॥३२॥

मुझ में ही अनुराग वाले भक्त श्री का धारण नहीं करते हैं, श्री सीता जी के भक्त बीच में शुभ सूचक विन्दु श्री करते हैं ॥३३॥

जिनकी भक्ति हम दोनों में श्री सीता राम में समान होती है वे बीच में सफेद लाल लम्बी श्री का धारण करते हैं, ॥३४॥

जो महाभाग भक्ति भाव से युक्त वैष्णव कृष्ण रूप धारी मुझे भजते हैं वे काला और लाल विन्दु सहित ऊर्ध्वपुण्ड करते हैं।

इति श्री वाल्मीकी संहितायामूर्ध्वपुण्ड्र
निरूपणस्य चतुर्थाध्यायस्य प्रकाशः ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीरामाय नमः

श्री वाल्मीकिसंहितायाः

पञ्चमोऽध्यायः

ऋषयऊचुः

महर्षे ! कृतकृत्याः स्मोनिपीयत्वद्वचोऽमृतम् ।
इदानीं किञ्चिदन्यद्वै जिज्ञास्यं नोऽस्ति हे प्रभो ।१।
वैष्णवानां च सर्वेषां केन केन च कर्मणा ।
कालक्षेपस्तु कर्तव्यस्तन्मे(तन्नो) ब्रूहि समासतः ॥२॥

वाल्मीकिरुवाच

एकदातु पुराकाले गिरिजा गिरिजापतिम् ।
इदमेव परंतत्त्वं पप्रच्छ श्रद्धया युता ॥३॥

ऋषियों ने कहा कि विभो महर्षे ! आप के वचन रूप अमृत का पान कर हम कृतकृत्य हैं, इस समय में कुछ दुसरा प्रष्टव्य-है ॥१॥

सब वैष्णवों को कौन कौन कर्म से कालक्षेप करना चाहिये वह संक्षेप से हमें कहिये ॥२॥

श्री वाल्मीकिजी ने कहा कि एक समय में पूर्वकाल में श्री पार्वतीजी ने श्रीशिवजी को यही उत्कृष्ट तत्त्व श्रद्धा से युक्त हो पूछा ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्रस्तुतद्वचः श्रुत्वा ह्यत्यन्तप्रीतमानसः ।
उवाच वचनं चेदं वैष्णवानां शिरोमणिः ॥४॥

रुद्रोक्तिः पार्वतीं प्रति

ब्राह्ममुहूर्ते चोत्थाय भगवन्नाम संस्मरेत् ।
ततो बाह्यप्रदेशेषु मलमूत्रे [त्रं] विसर्जयेत् ॥५॥

सप्तवारंच मृत्स्नाभिर्हस्तौसम्यग् विशोधयेत् ।
त्रिवारं सर्वदा कुर्यात् पादयोरपि शोधनम् ॥६॥

नद्यां वापि सरस्यांवा तटाकेवा महाह्रदे ।
कूपेवा सर्वदा स्नायाच्छुद्धिमिच्छन् द्विजोत्तमः ॥७॥

तब वैष्णवों के मध्य में सर्वश्रेष्ठ श्री शिवजी ने श्री पार्वतीजी का वचन सुनकर अत्यन्त प्रसन्नचित होकर यह वक्ष्यमाण वचन कहा कि ॥४॥

श्री शिवजी का वचन श्री पार्वतीजी के प्रति वैष्णव ब्रह्म मुहूर्त यानी रात्रि के चौथे भाग में उठकर यानी जागकर भगवान् के नाम का स्मरण करे बाद बाहर प्रदेश में दूर जाकर मल और मूत्र का त्याग करे ॥५॥

उसके बाद अच्छी मिट्टी से सात बार दोनो हाथों को शुद्ध करे, प्रतिशौच जाने में दोनों पावों को भी तीनबार मृत्तिका से शुद्ध करे ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्वादशानूर्ध्वपुण्ड्राश्च कृत्वावै संयतेन्द्रियः।
सन्ध्याभिवन्दनं कुर्यान्मोक्षकामः सदाद्विजः॥८॥

धनुर्बाणधरोरामोद्विभुजः श्यामसुन्दरः ।
जलजाक्षः किरीटी च सीतया सहितः सदा ॥९॥

ध्यानगम्योऽनुसन्ध्येयः सर्वश्रीवैष्णवैर्हृदि ।
सीतोष्णसुखदुःखेषु मित्रामित्रो प्रियाप्रिये॥१०॥

हस्त पादशोधन के बाद दन्त धारण कर नदी सरोवर तडाग (पोखरा) महा अगाध जल वाले जलाशय में और उसके अभाव में कूए में ब्राह्मण जो शुद्धि की इच्छा वाला हो सर्वदा यानी प्रतिदिन स्नान करे ॥७॥

स्नान के बाद बारह ऊर्ध्व पुण्ड्र संयतेन्द्रिय होकर तिलक कर मोक्षार्थी ब्राह्मण सर्वदा सन्ध्या वन्दन करे ॥८॥

ऊर्ध्व पुण्ड्र करने के बाद धनुर्बाण धारी द्विभुज श्यामवर्ण मनोहर कमल नयन मुकुटधारी सदा श्री जानकी जी के साथ विराजमान ध्यान से प्राप्य श्रीरामजी का स्मरण मन में सब श्री वैष्णवों को करना चाहिये ॥९॥

वैष्णव को सदा ज्ञान योग में तत्पर पवित्र हो शीत गर्मी सुख और दुःखों में समान मित्र और शत्रु में समान और प्रिय और अप्रिय में समान रहना चाहिये ॥१०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समःस्याद् वैष्णवोनित्यं ज्ञानयोगरतः शुचिः ।
अनिशं भगवान् रामो जगन्माता च जानकी ॥११॥
भक्त्या त्वनन्यया देवि ध्यातोभक्तं प्रपश्यति ।
नित्यवैभवसंयुक्तो नित्यलीलापरायणः ॥१२॥
नित्यशोभैकनिलयो नित्यकेलिकरः प्रभुः ।
सर्वस्य जगतः कर्ता भर्ता हर्ता तथैव च ॥१३॥
नित्यमुक्तैः समाकीर्णो हनुमदादिभिः सदा ।
सीताशोभितवामाङ्को रामो राजीवलोचनः ॥१४॥

हे पार्वती भगवान् श्री रामजी भगवती जगज्जननी श्रीजानकी जी अनन्य भक्ति से सर्वदा ध्यान करने वाले, कपने भक्त को देखते हैं ॥११॥

वे श्री रामजी नित्य वैभवोंसे युक्त हैं नित्यलीला में तत्पर नित्य शोभाओं का एक मात्र आधार हैं नित्य क्रीडा को करने वाले प्रभु श्रीराम है ॥१२॥

सब जगत का कर्ता भर्ता और हर्ता नित्य जीवन्मुक्त श्री हनुमान्जी आदियों से सदा सेवित श्री जानकी जी से शोभित स्वभक्तानुकूल स्वभाव वाले सहस्त्र दल कमल के समान नेत्र वाले भूलीला आदि देवियों से सेवित चरण कमल वाले हैं ॥१३॥

वे सर्वात्मा सर्वात्मना शुद्ध सनातन सर्वभावमय स्वामी सर्वव्यापक सर्वद प्रभु हैं ॥१४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूलीलेत्यादिदेवीभिः सेविताब्जपदद्वयः ।
सर्वात्मा सर्वनामा च शुद्धो बुद्धः सनातनः ॥१५॥
सर्वभावमयः स्वामी सर्वगः सर्वदः प्रभुः ।
स्वर्णसिंहासनासीनः साकेते परमे पदे ॥१६॥
नित्यं ध्येयः स तद्भक्तैरेष धर्मः सनातनः ।
ततः पश्चात्त्रिराचम्य रामभक्तिसमन्वितः ॥१७॥
महोपनिषदं प्रेम्णा मैथिल्याः सततं पठेत् ।

गिरिजोवाच.

नाथ ! केयं त्वयाऽऽदिष्टामहोपनिषदश्रुता ॥१८॥
मैथिल्यास्तु महालक्ष्यास्तन्मेब्रूहिदयानिधे ! ।

सुवर्ण सिंहासन पर बैठे हुए परमपद साकेत में वे श्री रामजी उनके भक्तों से नित्य ध्यातव्य है उन श्री रामचन्द्रजी का ध्यान रूप यह कर्म ही सनातन धर्म है ॥१५॥

उसके बाद तीन आचमन कर श्रीरामजी को भक्ति में तत्पर हो प्रेम से श्री मैथली महोपनिषत् का पाठ करे ॥१६॥

श्री पार्वती ने पूछा हे स्वामिन् श्री शिवजी ! श्री मैथिली महालक्ष्मी की महोपनिषत् आपने कही वह अश्रुत है हे दयानिधे वह मुझे कहिये । १७॥

श्री शिवजी ने कहा - कि—हे पार्वती देवि ! नित्य शुद्ध सनातनी वेद में प्रसिद्ध और वेदस्वरूपिणी श्री मैथिली—महोपनिषत् के स्वरूप को कहता हूँ सुनो ॥१८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[टाइटल नं. २ का शेष भाग]

प्रमाणमर्थस्याऽनुमानादिति–वा. भा. १।१।८। अतएव शब्द का भी प्रामाण्य प्रत्यक्ष एवं अनुमान के द्वारा ही सिद्ध होने के कारण शब्द प्रमाण अनुमान और प्रत्यक्ष से निर्बल है। यह हुआ विचार जहाँ प्रमाण अभिसम्प्लव होता है उस विषयक। परन्तु कुछ विशेष विषयों में जहां प्रमाण अभिसम्प्लव न होकर व्यवस्था होती हैं जैसे–'अग्नि होत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः यहां लौकिक पुरुष को स्वर्ग का ज्ञान नहीं प्रत्यक्ष से होता है न अनुमान से प्रत्युत केवल शब्द प्रमाण से 'स्तनयित्नु शब्दे श्रूय माने शब्द हेतो रनुमानम् यहाँ न तो प्रत्यक्ष प्रमाण होता है और न आगम, प्रत्युत केवल अनुमान, पाणौ प्रत्यक्ष उपलभ्य-मानेनानुमानम नागम यहां न अनुमान हो सकता हैं न आगम प्रत्युत केवल प्रत्यक्ष। अतएव व्यवस्था के प्रकरण में जैसे आकाश या पहाड पर न जल पोत जा सकता है और न कार प्रत्युत हवा-ईजहाज (हेलिकोप्टर) जल में न हवाई जहाज जा सकता है न कार प्रत्युत जलपोत, स्थल पर न हवाईजहाज चल सकता है न जल पोत प्रत्युत कार। इसी प्रकार प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द इन तीनों में हो अपनी अपती विशेषता है जो अन्य दो में नही है। अतएव सभी प्रमाण इस व्यवस्था के प्रकरण में अबाध हैं।

अतएव ईश्वर के प्रकरण में सभी प्रमाण अपनी अपनी स्व-विशेषता से ईश्वर की सिद्धि करते हैं और ईश्वर सर्वप्रमाण सिद्ध परम प्रामाणिक तत्त्व है।

प्रत्यक्षमनुमानञ्च शास्त्रञ्च विविधागमम् ।
त्रयं सुविदितं कार्यं धर्मशुद्धिमभीप्सता ॥ मनु० १२।१०५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Regd. No. GAMC 451

पाटोत्सव

सनातन जगत् में पश्चिमाम्नाय श्रीगमानन्दपीठ उत्सव पारायण प्रवचन आदि आयोजनों के लिये सुविख्यात है। इन आचार्यपीठों में कदाचित्हि कोई महिना खाली जाता है कि कोई न कोई धार्मिक व सामाजिक कार्य का अयोजन नहो। आचार्य पीठ के विशेष आयाजनों में से एक श्रीविश्रामद्वारकाधोश जीका पादोत्सव है जो माघ शुक्ल पञ्चमी के दिन बड़े समारोह के साथ मनाया जाता है। उसदिन भगवान् की शोभा यात्रा विशिष्ट सजावट से बाजते गाजते निकलती है तीर्थस्थान के चारों ओर दूर-दूर के हजारों लोग बडे उत्साह से इस यात्रा में सम्मिलित होते हैं। इस वर्ष दि० १९-१-८३ बुधवार को यह उत्सव मनाया जायेगा। इस प्रसंग में श्रीमद् भागवत रामायण प्रवचन का भी आयोजन है जो १९।१।८३ से २६।१।८३ तक सम्पन्न होगा।

मुद्रकः-श्रीरामानन्द प्रिंटिंग प्रेस, कांकरिया रोड, अहमदाबाद-२२

निर्दण्डि संस्थान श्रीशेषमठ-धर्मप्रचार विभागसे धर्मप्रचारार्थ प्रकाशित

प्रेषक-श्री कासलेन्द्र मठ सरखेज रोड
पो० पालड़ी, अहमदाबाद-३८० ००७
प्रापक श्री. नं.
प्रति श्री. .....

अध्ययन संस्थान
काठमाण्डू/नेपाल]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu